लोकतंत्र का महत्त्व

Loktantra ka Mahatva

विश्व में अनेक शासन प्रणालियाँ हैं। उनमें लोकतंत्र सर्वश्रेष्ठ शासन-प्रणाली मानी जाती है। अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र या प्रजातंत्र की परिभाषा इस प्रकार दी है- "लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा जनता का शासन हैं।"

जार्ॅज बर्नार्ड शार्ॅ के शब्दों में- "प्रजातंत्र एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य सभी लोगों का यथासंभव अधिक से अधिक कल्याण करना है।"

लोकतंत्रात्मक शासन-पद्धति में जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि विधायिका में पहुंचकर जनहित का ध्यान रखते हुए शासन का संचालन करते हैं। भारत के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया गया।

भारत का लोकतंत्र विश्व का सबेस बड़ा लोकतंत्र है। भारत के मतदाता निरक्षर भले ही हों, पर वे मूर्ख नहीं हैं। उनमंे राजनैतिक चेतना का अभाव भी नहीं है। उन्होंने अनेक बार चुनाव में अनेक नेताओं और राजनीतिक दलों को धूल चटाई है। 1947 से 1967 तक कांग्रेंस का एकछत्र शासन चलता रहा। 1967 में भारत के मतदाताओं ने कांग्रेस को एक हल्का सा झटका दिया और उसे सचेत करने का प्रयास किया। तब कई प्रदेशों में साझा सरकारें बनीं। इन सरकारों के अधिकांश मुखिया कांग्रेस से बगावत करके निकले नेता ही थे। यह प्रयोग कुछ समय में ही असफल हो गया। 1975 में इंदिरा गाँधी की सरकार ने आपातकाल लगाकर भारत को लोकतंत्र की पटरी से उतारने का प्रयास किया। अठारह मास का यह तानाशाही शासन भारतीय लोकतंत्र पर कलंक था। भारतीय मतदाता आपातकाल की ज्यादतियों से तंग आ गया था, अतः 1977 के चुनाव में उसने कांग्रेस और इंदिरा गाँधी को पराजित करके लोकतंत्र की शक्ति की परिपक्वता का परिचय दे दिया। जनता पार्टी की सरकार का नेतृत्व मोरारजी देसाई ने संभाला। गुटों में बंटे नेताओं के क्षुद्र स्वार्थों ने भारतीय मतदाताओं की आशाओं पर पानी फेर दिया। निराश जनता ने 1980 में पुनः इंदिरा गाँधी को शासन की बागडोर सौंप दी। 1984 में इंदिरा गाँधी की नृशंस हत्या

के पश्चात् लोगों ने राजीव गाँधी की ओर उत्साह भरी दृष्टि से देखा। बोफोर्स घोटाले के प्रति अपना असंतोष प्रकट करते हुए 1989 में राजीव गाँधी को भी पराजित कर दिखाया। तब वी.पी. ंिसंह के नेतृत्व में साझा सरकार बनी। यह सरकार भी अपना कार्यकाल पूरा न कर सकी। राजीव गाँधी की नृशंस हत्या से उपजी सहानुभूति ने एक बार कांग्रेस को पुनः शासन का अधिकार दे दिया। नरसिंह राव के प्रधानमंत्री रहते हुए अनेक घोटाले सामने आए। भ्रष्टाचार में अनेक नेता आकंठ डूब गए। तब जनता ने कांग्रेस को पुनः सबक सिखाया। 1996 में संयुक्त मोर्चा सरकार अस्तित्व में में आई, जिसे दो वर्ष से भी कम समय में दो प्रधानमंत्री बदलने पड़े। कांगे्रस ने इस सरकार पर अपना दबाव निरंतर बनाए रखा। फिर मध्यावधि चुनाव हुए और 1998 में सरकार बनाने का अवसर भारतीय जनता पार्टी को मिला। उसे भी 17-18 दलों का समर्थन पाने के लिए अनकी उचित-अनुचित माँगों को मानना पड़ा। अब ऐसा लगता है कि साझा सरकारों का युग आ गया है। इस प्रकार की सरकार पूरी शक्ति से अपने कार्यक्रमों को लागू नहीं कर पाती है।

1999 में फिर से श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राजग सरकार का गठन हुआ। इसमें भारतीय जनता पार्टी मुख्य घटक थी तथा 16-17 अन्य छोटे-छोटे दल शामिल थे। इस प्रकार की गठबंधन सरकार को चलाना कोई आसान बात नहीं थी। सरकार के घटक दल ही कोई-न-कोई परेशानी पैदा करते थे, विपक्षी दल तो करते ही थे। इसके बावजूद उन दलों की अपनी मजबूरियाँ भी थीं। सत्ता पक्ष का समर्थन न करने पर सरकार गिर सकती थी तथा पुनः चुनाव होने की स्थिति का सामना करना पड़ता। इसे कोई नहीं चाहता था। सरकार ने अपना कार्यकाल पूरा किया। 2004 के चुनावों में एन.डी.ए. सरकार का पतन हो गया और कांग्रेस के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू.पी.ए.) सरकार का गठन हुआ। इसके प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह बने।

इस स्थिति के बावजूद भारत के लोकतंत्र का भविष्य उज्ज्वल है। यह दौर (साझा सरकारांे का) कुछ समय पश्चात् समाप्त हो जाएगा। समान विचार वाले दलों का धुरवीकरण हो रहा है। लोकतंत्र में समस्याएँ तो आती ही हैं, पर उनका समाधान भी निकल आता है। भारत के लोकतंत्र की सफलता के लिए भारत से गरीबी और अशिक्षा को दूर करना आवश्यक है। राजनीतिक दलों को भी अपने ऊपर आदर्श आचार संहिता लागू करनी होगी। चुनाव आयोग भी इस दिशा में सचेष्ट है। भारत का लोकतंत्र अब परीक्षा की घड़ी

से गुजर चुका है। भारतीय मतदाताओं ने अनेक बार अपनी परिपक्वता का परिचय दिया है। भारतीय मतदाता अशिक्षित हो सकते हैं, पर अज्ञानी नहीं हैं।